कर्म मार्ग की श्रेष्ठता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

कर्म ही पूजा है। जो लोग कर्म में विश्वास करते हैं वे जीवन का साध्य प्राप्त कर लेते हैं। पुरूषार्थ करने से सफलता मिलती है। गीता में कर्म मार्ग की शिक्षा दी गई है। अर्जुन के मोहग्रस्त हो जाने पर भगवान श्री कृष्ण ने उन्हें क्षत्रिय धर्म का स्मरण कराया। कर्म मार्ग पर चलकर कर्तव्य कर्म करने से बंधन नहीं होता। कर्म निष्काम भावना से किया जाना चाहिए। कर्म सही दिशा में किया जाना चाहिए। हर व्यक्ति पुरूषार्थ करता है। उस कर्म की पीछे एक सिद्धान्त होना चाहिए, वह कर्म निष्काम भावना से होना चाहिए। कर्म को फल की इच्छा से नहीं करना चाहिए। फल की इच्छा के बिना किया गया कर्म कष्टदायी नहीं होता। फल की प्राप्ति हमारे हाथ में नहीं है। कोई भी कर्म पॉच कारणों से होता है– काल, स्वभाव, कर्म, पुरूषार्थ और नियति के योग से कोई कर्म सम्पन्न होता है। काल का अर्थ है समय। किसी विद्यार्थी को 10 की कक्षा देनी है तो एक निश्चित उम्र होनी चाहिए, उसमें योग्यता होनी चाहिए, उसे पुरूषार्थ करना चाहिए। भाग्य और पुरूषार्थ एक–दूसरे में बदलते रहते हैं। अच्छा पुरूषार्थ पुण्य एवं बुरा पुरूषार्थ पाप प्रदान करता है। जो जैसा कर्म करता है उसको वैसा फल मिलता है। भाग्य और पुरूषार्थ एक सिक्के के दो पहलू हैं। नियति का जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। कर्म करना मनुष्य पर निर्भर है उसका फल मिलना नियति पर निर्भर है। कई बार ऐसा होता है कि हमारी दिशा ठीक है किन्तु नियति के कारण कुछ त्रुटि आ गयी। कभी–कभी योग्य विद्यार्थी सफल नहीं हो पाता और कम योग्य को सफलता मिल जाती है। यह नियति का खेल है। व्यक्ति में पूरी योग्यता है। पार्टी के सदस्य उसको उच्च पद पर बैठाना चाहते हैं किन्तु कोई बाधा प्रस्तुत हो गयी तो मानना चाहिए कि यह नियति का खेल है। इसलिए कर्म करना व्यक्ति के हाथ में है और फल मिलना ईश्वर के हाथ में है। कर्तव्य भावना से कर्म करना चाहिए। सृष्टि के संचालन में अनेक कारण है किन्तु जब करने वाला अपने को मान लेता है कि मैने किया तो यह अनुचित है। कार्य का होना एक संयोग है। कर्तापन भी संयोग में एक कारण है। कर्तव्य भावना से किया गया कर्म निष्काम भावना से कर्म

योग हो जाता है। हानि–लाभ, जीवन–मरण, सुख–दुख यह ईश्वर के हाथ में है। बहुत परिश्रम करने के बाद भी सफलता का न मिलना और कम कर्म करने पर भी सफलता मिल जाना यह बताता है कि एक तीसरी अदृश्य शक्ति है जो व्यक्ति को संचालित करती हैं वही ईश्वर है। कर्म आत्म पवित्रता के लिए करना चाहिए। संसार की सभी उपलब्धियॉ यहीं छूट जाती है। यहॉ तक की शरीर भी यहीं छूट जाता है। केवल कर्म ही जीव के साथ जाता है। इसलिए निष्काम कर्म करना चाहिए।

निष्काम कर्म का तात्पर्य है ऐसा कर्म जिसे बिना किसी लालसा, बिना किसी कामना और फल की इच्छा किये बिना किया जाये। ऐसा कर्म निष्काम कर्म कहलाता है। कामना पूर्वक किया गया कर्म बंधन का कारण होता है। फल की इच्छा का त्याग कर जो कर्म किया जाता है वह बंधन का कारण नहीं होता, क्योंकि यह कर्म आसक्त रहित है। भारतीय संस्कृति में निष्काम कर्म को बहुत महत्व प्रदान किया गया है। श्रीमद्भगवत्गीता का मूल सार ही निष्काम कर्म योग है। गीता के प्रथम छः अध्यायों में कर्ममार्ग का वर्णन है। कर्ममार्ग का तात्पर्य है जीवन में कर्म करो, किन्तु कर्मफल की इच्छा मत करो। कर्मफल की इच्छा करने से यदि मनोनुकूल फल की प्राप्ति नहीं होती तो प्राणी को दुःख होता हैं इसलिए फल का त्याग करके कर्म करना चाहिए। जीवन में निराशा का भाव नहीं लाना चाहिए। चारों आश्रमों, पुरुषार्थ चतुष्टय इत्यादि में कर्म करने की ही प्रेरणा दी गई है।

हे मानव ! तुम कर्मयोगी बनो। बिना कर्म किये मानव का जीवन निष्क्रिय हो जाता है। वह समाज पर भारभूत हो जाता है, इसलिए सदैव कर्म करते रहना चाहिए। दूसरा महत्वपूर्ण संदेश भक्ति मार्ग का है। भक्तिमार्ग का तात्पर्य है– श्रद्धापूर्वक ईश्वर में विश्वास करना। ईश्वरार्पण बुद्धि से किया गया कार्य अहंकार को समाप्त कर देता है। इसलिए जो भी कार्य किया जाये वह कर्ता बुद्धि से नहीं बल्कि ईश्वर को समर्पित करके किया जाता है। गीता में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जो व्यक्ति मुझको सर्वत्र और सभी प्राणियों में मुझको देखता है वह मेरे लिए नहीं मरता और मैं भी उसकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहता हूं। यह सम्पूर्ण संसार धागे में मनके की भांति मुझमें पिरोया हुआ है। सभी जीव मेरे अंश है और मैं सभी में हूं। यही गीता का भक्तिमार्ग है। तीसरा महत्वपूर्ण संदेश ज्ञानमार्ग का है। ज्ञान से तात्पर्य सम्यक् ज्ञान से है।

गीता कहती है कि बिना ज्ञान के मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं। अज्ञानी व्यक्ति संसार में भटकता रहता है। सत्य का स्वरूप उसे दिखलायी नहीं देता। सत्यज्ञान प्राप्त करने के लिए शास्त्रों का अध्ययन, गुरु का सान्निध्य आवश्यक है। गुरु ही अज्ञान के अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। जिससे प्राणी में ज्ञान का बीज अंकुरित होता है। इस प्रकार कर्मभक्ति और ज्ञान गीता के मूलमंत्र है। गीता सर्वेश्वरवाद का उपदेश देती है। सर्वेश्वरवाद का अर्थ है सृष्टि के कण–कण में ईश्वर की सत्ता है। सृष्टि का कोई भी स्थान ऐसा नहीं है जहां ईश्वर की सत्ता न हो। ईश्वर सगुण और निर्गुण दोनों रूपों में व्याप्त है।